नव भारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

टैरिफ की चुनौती, एक बड़ा अवसर भी!

अमेरिका द्वारा भारत पर लगाया गया 50 फीसदी टैरिफ,जिसमें 25 फीसदी सामान्य शुल्क और 25 फीसदी रूस से तेल खरीदने पर दंडस्वरूप शुल्क शामिल है,द्विपक्षीय व्यापार संबंधों पर गहरा असर डाल सकता है. यह कदम न केवल डब्ल्यूटीओ के मूल व्यापार सिद्धांतों का उल्लंघन है, बल्कि भारत की ऊर्जा स्वतंत्रता और रणनीतिक निर्णयों पर हस्तक्षेप का भी एक असफल प्रयास है.

अमेरिका का तर्क है कि भारत रूस से कच्चा तेल खरीदकर रूस की अर्थव्यवस्था को मज़बूती दे रहा है, लेकिन यह एकपक्षीय दृष्टिकोण है. भारत स्पष्ट कर चुका है कि उसकी ऊर्जा नीति उसके राष्ट्रीय हितों पर आधारित है, न कि किसी ब्लॉक की अपेक्षाओं पर. भारत ने बार-बार दोहराया है कि वह यूक्रेन युद्ध में शांति और संवाद का समर्थक है, लेकिन किसी के दबाव में आकर अपनी ऊर्जा सुरक्षा से समझौता नहीं कर सकता.इस टैरिफ का सबसे अधिक असर भारत के उन श्रम प्रधान निर्यात क्षेत्रों पर पड़ेगा जो अमेरिका को भारी मात्रा में निर्यात करते हैं—जैसे कि रत्न व आभूषण, कपड़ा, चमड़ा और समुद्री खाद्य. ये क्षेत्र देश की निर्यात अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं और करोड़ों लोगों की आजीविका इन्हीं पर टिकी है.

इस पूरी परिस्थिति में जिस चीज़ ने भारत को विचलित नहीं होने दिया, वह है प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का शांत, दृढ़ और दूरदर्शी नेतृत्व. मोदी न तो जल्दबाजी में प्रतिक्रिया देने वाले नेता हैं, न ही झुकने वाले. उन्होंने इस चुनौती को 卐संकट नहीं, अवसर卐 की दृष्टि से देखा है—जो आज की वैश्विक राजनीति में एक दुर्लभ विशेषता बन गई है.प्रधानमंत्री मोदी का विश्वास है कि जब एक दरवाजा बंद होता है, तो भारत अपने दम पर सौ और दरवाजे खोल सकता है. उनकी वसुधैव कुटुंबकम् की नीति वैश्विक मंचों पर भारत की आवाज़ को नई प्रतिष्ठा दिला रही है, और यह संकट उन्हें और अधिक मुखर बना रहा है.वर्तमान सरकार पहले से ही मेक इन इंडिया, वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट, पीएलआई योजना जैसे उपायों के माध्यम से उत्पादन और निर्यात को विविधतापूर्ण और प्रतिस्पर्धी बना रही है.

मोदी के नेतृत्व में भारत अब सिंगापुर, यूरोप, लैटिन अमेरिका, अफ्रीका जैसे नए बाजारों में व्यापारिक संधिया करने के लिए तत्पर है, ताकि अमेरिकी निर्भरता को रणनीतिक रूप से संतुलित किया जा सके .यह भी उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री मोदी व्यक्तिगत रूप से वैश्विक राजनयिक संबंधों में विश्वास रखते हैं. उन्होंने जी 20 की अध्यक्षता से लेकर ब्रिक्स और एससीओ के मंचों तक भारत की संप्रभु आवाज को मजबूती दी है. उनका यह आत्मविश्वास और वैश्विक सोच ही है कि वे अमेरिका को आंखों में आंखें डालकर अपनी नीति समझा सकते हैं, और साथ ही घरेलू उद्योग को नए अवसरों के लिए प्रेरित कर सकते हैं.

दरअसल, यह टैरिफ संकट एक साधारण व्यापारिक विवाद नहीं है,यह भारत की रणनीतिक संप्रभुता, आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था, और वैश्विक कूटनीतिक प्रतिष्ठा की परीक्षा है. लेकिन इस संकट में देश को कोई संदेह नहीं कि भारत न केवल इस चुनौती से उबरेगा, बल्कि एक नई व्यापारिक, कूटनीतिक और औद्योगिक रणनीति के साथ और अधिक सशक्त होकर उभरेगा .अमेरिका को यह समझना होगा कि 21वीं सदी का भारत एक नवोन्मेषी, निर्णायक और राष्ट्रीय स्वाभिमान से भरा हुआ राष्ट्र है, जो दबाव में नहीं, केवल संवाद में विश्वास करता है.

भारत में कृषि क्रांति तेज़ गति से जारी

शिवराज सिंह चौहान
केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री, भारत सरकार

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में निरंतर सुधारों और किसान-केंद्रित पहलों के चलते कृषि क्षेत्र में निरंतर प्रगति हुई है. इसका परिणाम यह है कि भारत ने धान, गेहूं, मक्का, मूंगफली और सोयाबीन का रिकॉर्ड उत्पादन किया है. कृषि वर्ष 2024-25 के तीसरे अग्रिम अनुमान के अनुसार कुल खाद्यान्न उत्पादन 353.96 मिलियन टन रहने का अनुमान है, जो अब तक का सर्वोच्च है और 2014-15 (252.02 मिलियन टन) की तुलना में 40त्न अधिक है.

1960 के दशक की खाद्य असुरक्षा और जड़ता को पीछे छोड़कर आज भारत खाद्य अधिशेष वाला देश बन चुका है. इससे माल्थस की यह धारणा गलत साबित हुई है कि जनसंख्या वृद्धि, खाद्य उत्पादन से अधिक होगी. 1967 में विलियम और पॉल पैडॉक ने भारत में अकाल की भविष्यवाणी की थी, परन्तु उच्च उपज वाली फसल किस्मों, कृषि रसायनों और सिंचाई पर आधारित हरित क्रांति ने इसे झुठला दिया. भारत का खाद्यान्न उत्पादन 1966-67 के 74 मिलियन टन से बढ़कर 1979-80 तक 130 मिलियन टन हुआ, और अब यह 2024-25 में 354 मिलियन टन तक पहुंचने वाला है. बागवानी उत्पादन भी 1960 के दशक के 40 मिलियन टन से बढ़कर 2024-25 में 334 मिलियन टन हो गया है.

विपरीत परिस्थितियों को सहने वाली किस्मों और अनुकूल कृषि पद्धतियों की बदौलत अब उत्पादन में अधिक स्थिरता आई है. भारत ने डेयरी, मुर्गीपालन और मत्स्य पालन जैसे क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय प्रगति की है. श्वेत क्रांति ने 1970 में दूध उत्पादन को 20 मिलियन टन से बढ़ाकर 2023-24 में 239 मिलियन टन तक पहुंचा दिया है, जो पूरे यूरोप के बराबर है. नीली क्रांति ने मछली उत्पादन को 2.4 मिलियन टन (1980) से बढ़ाकर 2024-25 में 19.5 मिलियन टन कर दिया है, जिससे भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा समुद्री खाद्य उत्पादक और निर्यातक बन गया है.

मुर्गीपालन अब घरेलू गतिविधि से बढ़कर एक उद्योग बन चुका है, जिसमें अंडा उत्पादन 10 बिलियन से बढ़कर 143 बिलियन और मांस उत्पादन 113 हजार टन से बढ़कर 5,019 हजार टन हो गया है. 2014-15 से 2023-24 के बीच, दूध, अंडे, ब्रॉयलर मांस और मछली उत्पादन में अभूतपूर्व वार्षिक वृद्धि दर्ज की गई है. तकनीकी प्रगति, बेहतर संसाधन प्रबंधन और कुशल मानव संसाधन ने इस वृद्धि को गति दी है.

> इस चुनौती से निपटने के लिए, जल-कुशल फसलों जैसे तिलहन और दलहन को प्राथमिकता देनी चाहिए. चावल की अत्यधिक जल-आधारित खेती के बावजूद प्रतिवर्ष 20 मिलियन टन का निर्यात भूजल को संकट में डाल रहा है. भारत को दलहन और तिलहन के उत्पादन को बढ़ाने की आवश्यकता है, जिसमें 12 मिलियन हेक्टेयर चावल-परती भूमि का बेहतर उपयोग किया जा सकता है. हालाँकि, वर्तमान में इन फसलों की उत्पादकता में क्रमश: 18-40 प्रतिशत (तिलहन) और 31-37त्न (दलहन) का अंतर है, जो तकनीकी उन्नयन की आवश्यकता को दर्शाता है. विकसित कृषि संकल्प अभियान (वीकेएसए) के माध्यम से 728 जिलों में 1.35 करोड़ किसानों तक वैज्ञानिक सलाह पहुँची है. सरकार ने मिशन मोड में उच्च उपज वाले बीजों पर आधारित योजनाएँ शुरू की हैं. कृषि अनुसंधान में उत्पादकता, सहनशीलता और संसाधन दक्षता बढ़ाने की अपार संभावनाएं हैं. एआई और डेटा एनालिटिक्स जैसे आधुनिक उपकरण वैश्विक कृषि अनुसंधान में क्रांति ला रहे हैं. भारत कृषि अनुसंधान एवं विकास में सालाना रु.116 बिलियन (कृषि जीडीपी का 0.5प्रतिशत) निवेश करता है, और अब इसे बढ़ाकर मांग-आधारित दृष्टिकोण अपनाने की योजना है. कृषि विज्ञान केंद्रों, राज्य विस्तार प्रणालियों और केंद्र-राज्य समन्वय को मजबूत करने से किसानों से अनुसंधान का सीधा जुड़ाव बढ़ेगा. एक राष्ट्र, एक कृषि, एक टीम के विजन के अंतर्गत, आईसीएआर के नोडल अधिकारी राज्य स्तरीय कार्ययोजनाओं का मार्गदर्शन कर रहे हैं ताकि विकसित भारत के लक्ष्य को साकार किया जा सके.

अब फल, सब्ज़ियां और पशु उत्पाद जैसे उच्च-मूल्य वाले खाद्य पदार्थ, पारंपरिक खाद्यान्नों की तुलना में तेज़ी से बढ़ रहे हैं. इससे कृषि विविधीकरण, पोषण, किसानों की आय और जलवायु सहनशीलता में तकनीक की महत्वपूर्ण भूमिका स्पष्ट होती है.

आईसीएआर के शोध के अनुसार, कृषि में निवेश पर उच्च लाभ प्राप्त होता है—अनुसंधान और विस्तार पर खर्च किए गए प्रत्येक रुपये पर क्रमश: ?13.85 और ?7.40 की वापसी होती है. पीएम-किसान, पीएमकेएसवाई, राष्ट्रीय पशुधन मिशन और नीली क्रांति जैसी योजनाओं ने संसाधनों के कुशल उपयोग, जोखिमों में कमी और प्रौद्योगिकी के प्रोत्साहन के माध्यम से कृषि विकास को मजबूती दी है.

भारत ने 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का लक्ष्य रखा है, जिसके लिए अर्थव्यवस्था को प्रति वर्ष 7.8त्न की दर से बढ़ना होगा. उस समय तक जनसंख्या के 1.6 अरब और आधे से अधिक लोगों के शहरी क्षेत्रों में रहने का अनुमान है.

ग्वालियर चंबल डायरी

पड़ोसी जिलों से उठी आवाज, हमारा भी नुकसान देखें...

हरीश दुबे

ग्वालियर चंबल में अतिवृष्टि और बाढ़ ने इस बार जो कहर बरपाया, उसकी मिशाल पिछली एक सदी में कम ही मिलती है. अकेले शिवपुरी गुना की ही बात करें तो इस विभीषिका में 29 लोग काल कवलित हो गए. किसानों की साल भर की आजीविका का एकमेव जरिया फसल बर्बाद हो गई, सो अलग. मुसीबत की इस घड़ी में सीएम मोहन यादव और केंद्रीय मंत्री सिंधिया ने बाढ़ पीड़ितों के बीच पहुंचकर न सिर्फ उन्हें हिम्मत बंधाई बल्कि सूबे की सरकार की तरफ से यह भरोसा भी

दिया कि राज्य सरकार प्रत्येक पीड़ित के साथ खड़ी है और सरकारी इमदाद में कोई कोताही नहीं बरती जाएगी. जो लोग बाढ़ और अतिवृष्टि में मारे गए, उनके परिजनों को तो सहायता मिलेगी ही, इसके अलावा जिन किसानों की फसल बर्बाद हुई है, उनके खेतों पर पहुंचकर नुकसान के सर्वे के लिए तहसीलदार, पटवारी और रेवेन्यू अमले को फील्ड में उतार दिया गया है. आपदा की घड़ी में प्रदेश के मुखिया के साथ सिंधिया द्वारा किए गए दौरे से चंबल और मालवा के संधिस्थल पर बसे शिवपुरी गुना के निवासियों को जहां सुकून मिला है वहीं संभाग के अन्य जिलों ग्वालियर, दतिया, मुरैना, श्योपुर और भिंड के लोगों को इस बात की कशिश है कि सीएम और सिंधिया ऐसा ही दौरा उनके जिलों में भी करते तो संकट की बेला में उनके इलाकों पर भी नियामतों की बरसात होती. लेकिन सीएम का दौरा फिलवक्त सिंधिया के संसदीय क्षेत्र तक ही सीमित रहा है. सूत्रों की मानें तो सीएम के सिंधिया के साथ एक और दौरे का प्लान किया जा रहा है जो ग्वालियर, दतिया , भिंड और मुरैना पर केंद्रित रहेगा. इन तीनों जिलों के भाजपा सांसदों ने अपनी बात श्यामला हिल्स तक पहुंचाई है.

खेल से होकर भी गुजरता है राजनीति का रास्ता

विधानसभा अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह के बड़े बेटे जहां राजनीति के साथ खेल प्रशासक की भी भूमिका में हैं और हॉकी इंडिया समेत कई खेल संगठनों में सक्रिय दखल रखते हैं वहीं अब रघु भैया के नाम से पहचान रखने वाले स्पीकर महोदय के कनिष्ठ पुत्र प्रबल प्रताप सिंह ने भी सियासत के टेढ़े मेढ़े रास्तों पर चलने के लिए खुद को मुकम्मल बनाने खेलों का रास्ता चुना है. बॉलीवुड के परवीन डबास और प्रीति झंगियानी ने ग्वालियर शहर में प्रो पंजा टूर्नामेंट के आयोजन की आधिकारिक घोषणा की और इसके बाद सीज़न 2 के रोमांचक मैच शुरू हुए तो इसके आयोजन की पूरी कमान रघु ने ही संभाल ली. इतना ही नहीं, मशल्स के खेल प्रो पंजा लीग में ग्लैमर का चटक रंग भरने के लिए रघु मुंबई से ग्रेट खली, अभिनेता राजपाल यादव और विजेंद्र सिंह जैसे सितारों को भी ग्वालियर ले आए हैं. बॉलीवुड की कई फिल्मों में अभिनय कर चुकीं अभिनेत्री प्रीति झिंगयानी और परवीन डबास पहले से ही इस प्रो पंजा लीग के आईकॉन बने हुए हैं. नरेन्द्र सिंह के दोनों पुत्र रामू और रघु राजनीति में अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए तत्पर हैं लेकिन पार्टी नेतृत्व द्वारा नेता पुत्रों के लिए तमाम बंदिशें लगाने के चलते फिलहाल बात उस तरह से नहीं बन पा रही जैसी कि उम्मीद थी. जब तक सियासत में रास्ता नहीं बनता है, तब तक खेलकूद ही सही, शायद यही सोचकर दोनों नेतापुत्र खेल प्रशासक के रूप में परफॉर्मेंस देने में व्यस्त हैं.

करीब आ गए निगम चुनाव, वार्ड मौहल्लों की सियासत तेज

ग्वालियर निगम परिषद ने अपना तीन साल का कार्यकाल पूरा कर लिया. इस तरह नगर निगम चुनाव में अब बमुश्किल दो साल से भी कम वक्त बचा है. अगला महापौर कौन बनेगा, यह काफी हद तक रोटेशन पद्धति से होने वाले आरक्षण पर निर्भर करता है. यही स्थिति पार्षद पद के लिए भी है. अभी जिन वार्डों में सामान्य वर्ग से पार्षद हैं, संभव है कि दो साल बाद वह वार्ड अजा वर्ग के लिए रिजर्व हो जाए. यह भी संभव है कि जिन वार्डों में पुरुष प्रतिनिधि नुमाइंदगी कर रहे हैं, अगले निगम चुनाव में वह वार्ड महिलाओं के लिए रिजर्व हो जाए. इस असमंजश भरे माहौल के बावजूद सियासी हलकों में नगर निगम चुनाव की तैयारियां जारी हैं. मौजूदा पार्षद भी दोबारा जल विहार पहुंचने के लिए अभी से नाराजों को मनाने के साथ दीगर काम छोड़कर वार्ड को ज्यादा वक्त दे रहे हैं. करीब पचपन साल के लंबे अंतराल के बाद पिछली बार यहां कांग्रेस ने अपना महापौर बनाया था.

पाकिस्तान में हर छठा व्यक्ति भिखारी

पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर है कि वहां की 23 करोड़ की आबादी में से 4 करोड़ लोग भीख मांगकर र गुजारा क करते हैं. इस तरह वहां का हर छठा व्यक्ति भिखारी है. भीख मांगने का पेशा इसलिए भी लोगों को पसंद आ रहा है कि इसमें कमाई ज्यादा है. किसी अकुशल श्रमिक की तुलना में भिखारी ज्यादा कमा लेता है, इसलिए बेरोजगार लोग बेशर्मी से भीख मांगने बैठ जाते हैं. पाकिस्तानी अखबार डॉनज्की रिपोर्ट के अनुसार देश की 11 फीसदी जनता जीवन निर्वाह के लिए भीख मांगती है. पाकिस्तान के हजारों लोग हज करने के नाम पर सऊदी अरब गए और फिर वहीं रुककर भीख मांगने लगे. जब मस्जिदों और मजारों के सामने बैठने के बाद वह पॉश बस्तियों में भी घुसने लगे तो सऊदी अरब सरकार ने उन्हें पकड़कर वापस पाकिस्तान भेज दिया. खाड़ी देशों में उन्हें भीख से ज्यादा रकम मिलती थी. इनकी वजह से पाकिस्तान की काफी बदनामी हुई.

एक सर्वे के अनुसार पाकिस्तानी भिखारी दिन भर में बिना काम किए 850 पाकिस्तानी रुपए कमा लेता है. उन्हें हर वर्ष 117 लाख करोड़ रुपए की भीख मिलती है. एशियाई मानवाधिकार आयोग ने भी पाकिस्तान में भिखारियों की बड़ी तादाद को गंभीर समस्या माना है. इस्लाम में खैरात को महत्व दिया गया है और कमाई का एक हिस्सा जरूरतमंदों पर खर्च करने को कहा गया है इसलिए भिखारियों की तादाद बढ़ती ही जा रही है. इसके पीछे गरीबी और अशिक्षा भी है. अशिक्षित युवाओं के सामने 2 ही विकल्प रहते हैं, या तो भीख मांगें या फिर सेना और आईएसआई की ट्रेनिंग से आतंकवादी बन जाएं. उनकी पैसे की तंगी और मजहबी उन्माद का खुफिया एजेंसी आईएसआई फायदा उठाती है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

कबूतर पालना नवाबी शौक दाना डालने पर न लगाएं रोक

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, कबूतर की कद्र देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू करते थे. चाहे 15 अगस्त का स्वाधीनता दिवस समारोह हो या गुटनिरपेक्ष देशों का सम्मेलन, वह शांति के प्रतीक कबूतर को अपने दोनों हाथों से खुले आसमान में उड़ने के लिए छोड़ा करते थे. खेद है कि अन्य किसी प्रधानमंत्री ने कबूतर उड़ाने की शानदार परंपरा नहीं निभाई.

हमने कहा, मुंबई महापालिका ने कबूतरों को दाना डालने वालों को ऐसा करने से मना किया है. कबूतर की विष्ठा के संपर्क में आने से दमा, ब्रांकाइटिस जैसी बीमारियां फैलती हैं और फेफड़े का संक्रमण होता है. इंसान का स्वास्थ्य कीमती है इसलिए कबूतर पालने और उन्हें दाना डालकर उनका झुंड जमा करने पर मनाही की गई है.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, यह कदम जीवदया के खिलाफ है. मुंबई के गेटवे ऑफ इंडिया के पास बड़ी तादाद में कबूतर दाना चुगते हैं. लंदन के पिकैडली सर्कस और रोम के स्क्वेयर पर भी कबूतरों का झुंड मौजूद रहता है. कबूतर पालना नवाबी शौक रहा है. लखनऊ के नवाबों में कबूतर उड़ाने की शर्त लगा करती थी कि किसका कबूतर ज्यादा ऊंचाई पर जाएगा. प्रशिक्षित कबूतरों के जरिए प्राचीन डाकसेवा शुरू की गई थी. आपने गीत सुना होगा- कबूतर जा-जा-जा, पहले प्यार की पहली चिट्ठी साजन को दे आ! कबूतर के पैर में चिट्ठी बांध दी जाती थी. वह उसका जवाब भी इसी प्रकार वापस लेकर आता था. माया

गोविंद ने गीत लिखा था- चढ़ गया ऊपर रे, अटरिया पे लोटन कबूतर रे! पुराणों में राजा शिवि की कथा है कि उन्होंने इंद्र से कहा था कि कबूतर को मारने की बजाय उसके वजन का मेरा मांस ले लो. इसी तरह देवदत्त कबूतर को मारना चाहता था, लेकिन उसके चचेरे भाई राजकुमार सिद्धार्थ ने उसको अपने पास शरण दी. मारने वाले से बचाने वाला हमेशा बड़ा होता है.

हमने कहा, चिंता मत कीजिए. मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि कबूतरखानों को अचानक बंद करना उचित नहीं है. कबूतरों की जान बचाना, पर्यावरण की रक्षा करना और नागरिकों का स्वास्थ्य सुरक्षित रखना तीनों बातें महत्वपूर्ण हैं. जब तक कोई वैकल्पिक व्यवस्था नहीं हो जाती तब तक बीएमसी कबूतरों को नियमित दाने की सप्लाई करना जारी रखे.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11987
- डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3	4	■	5	6	7
8				■	9		
	■		■	10		■	
■	11		12			■	
13		■	14		■	15	■
	■	16			■	17	18
19	20	■		■	21		
22			■	23			

बाएं से दाएं
1. मुस्लिम राज्यकाल में मुसलमान बन जाने वाली एक राजपूत जाति 5. आंखों से ओझल करना, प्रकट नहीं करना 8. गरम होना, क्रुद्ध होना 9. वह रज जो फूलों के बीच लंगबे केसरों पर जमी रहती है, पुष्प रज 10. बगुला, कुबेर, सफेद (सं.) 11. पैर या हाथ की सबसे छोटी तथा अंतिम उंगली 13. एक फल विशेष, आम्र, जनता का 14. ठहरने का स्थान, खेमा, तंबू, छावनी 16. धोखा देना, मोहित करना, छल, धोखा 17. एक देव योनि जिसके राजा कुबेर हैं 19. संदेह, शंका 21. श्रीकृष्ण के बाल सखा जो बहुत दरिद्र थे 22. अरब का एक प्रदेश, रोकना 23. कैंची या अन्य किसी औजार से काटना

ऊपर से नीचे
1. लेकिन, परंतु, घड़ियाल 2. एक-सी वस्तुओं की माला, लड़ 3. मनु की पत्नी श्रद्धा, प्रसादजी का एक प्रबंध काव्य (सं.) 4. माता का पिता, विविध 5. एक रेंगनेवाला जंतु जो प्राय: घर की दीवारों पर दिखाई देता है और कीड़े खाता है 6. एक प्रसिद्ध चमकदार तरल धातु 7. महाराष्ट्र की उपराजधानी 10. फैलना, छितराना 11. कार्य, प्रयोजन, सरोकार, व्यवसाय 12. तरल पदार्थ को किसी अन्य पात्र में डालना 13. जठर, पेट के भीतर की वह थैली जिसमें खाया हुआ अन्न जाता और पचता है 15. मजबूत, दृढ़, टिकाऊ (उर्दू) 18. क्षमा करना 20. अल्प, थोड़ा 21. पुत्र, बेटा (सं.)

Solution 11986

अ	ट	क	ना	■	ब	क	ना
न	क	■	प	लं	ग	पो	श
ल	ट	क	ना	■	रा	त	■
■	का	था	■	म	ना	■	ब
ज	ना	न	खा	ना	■	पे	च
ह	■	क	■	व	ह	श	त
र	ई	■	ज	न	म	त	■
■	द	ला	ल	■	ल	र	जा

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में मित्रों और भाईयों के सहयोग से कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी, मान प्रतिष्ठा बढेगी, वाहन का सुख मिलेगा, राजनैतिक क्षेत्र में वृद्धि होगी, धन संकट का सामना करना पडेगा, शिक्षा में व्यवधान आयेगा, वर्ष के अन्त में व्यापार में प्रगति होगी, कार्यप्रणाली लेखन और साहस में सफ्लता मिलेगी, प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को वाहन का सुख मिलेगा, राजनैतिक कार्यो में असुविधाओं का सामना करना पडेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को परिश्रम अधिक करना होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को लेखन अध्ययन के क्षेत्र में सफ्लता प्राप्त होगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को पराक्रम का सामना करना होगा, मकर ओर कुंभ राशि के व्यक्तियों का कार्य क्षेत्र में वृद्धि होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को जायजाद संबंधी कार्यो में परेशानी होगी, मतभेदों में वृद्धि होगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य, सुन्दर, एकांतप्रिय, ईमानदार होगा, परिश्रमी दृढ़ निश्चयी होगा, साहसिक कार्य करने वाला, बुद्धि का तेज होगा, बचपन में स्वास्थ्य कुछ नरम गरम रहेगा, बाद में अच्छा स्वास्थ्य रहेगा, आर्थिक स्थिति जीवन भर अच्छी रहेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

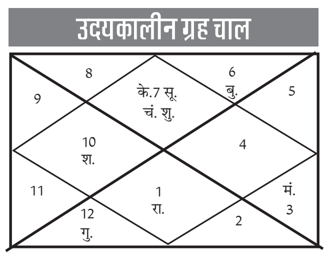

पंचांग

रा.मि. 17 संवत् 2082 श्रावण शुक्ल चर्तुदशी भृगुवासरे दिन 1/42, उत्तराषाढ़ नक्षत्रे दिन 3/7, प्रीति योगे दिन 7/1, वणिज करणे सू.उ. 5/28 सू.अ. 6/32, चन्द्रचार मकर, पर्व- पूर्णिमा व्रत, शु.रा. 10,12,1,4,5,8 अ.रा. 11,2,3,6,7,9 शुभांक- 3,5,9.

व्यापार भविष्य

श्रावण शुक्ल चर्तुदशी को उत्तराषाढ़ नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, तांबा, लोहा, गुड, खांड, चीनी, ज्वार, मोट आदि में तेजी होगी, घी, गुड, जौ, चना के भाव में नरमीं होगी. भाग्यांक 3712 है.

मेष- विरोधी उलझाने का प्रयास कर सकते हैं, मेहमानों की आवाजाही बनी रहेगी, पारिवारिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी, नये मित्रों से मुलाकात होगी.

वृषभ- संबंधों को बेहतर बनाने की कोशिश करेंगे, कोर्ट कचहरी के कार्यों में व्यस्तता रहेगी, पारिवारिक जवाबदारी बढ़ेगी, धार्मिक कार्यों में मन लगेगा.

मिथुन- तनाव की स्थिति में परिवार का साथ खुशी देगा, रोजगार के इच्छित अवसर मिल सकते हैं, पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी, अनावश्यक विवादों से बचें.

कर्क- राजकीय मामले में पक्ष मजबूत होगा, प्रापर्टी खरीदने का मन बनेगा, अत्याधिक व्यस्तता होगी, सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी, निजी मामलों में एक रूपता रहेगी.

सिंह- मामूली बात को लेकर कार्य स्थल पर परेशानी होगी, अपनी सीमाओं का ध्यान रखें, श्रम एवं प्रयास करने से विरोधियों का शमन होगा, भाग्यवर्धक समाचार मिलेगा.

कन्या- युवाओं को केरिअर में बेहतर परिणाम मिल सकते हैं, तय कार्यक्रम में बदलाव से परेशानी होगी, प्रिय व्यक्ति के आगमन से प्रसन्नता रहेगी. खानपान पर ध्यान दें.

तुला- जीवनसाथी के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, लोगों की बातों से मन परेशान रहेगा, दिनचर्या नियमित रहेगी, व्यापार व्यवसाय में अच्छी सफ्लता प्राप्त होगी.

वृश्चिक- सूझबूझ से फैसला लेने में सफ्लता मिलेगी, जिद में आकर अपना नुकसान न करें, आकस्मिक खर्च में वृद्धि होगी, दैनिक कार्यों में परिवर्तन होगा.

धनु- योजनओं को पूरा करने में मदद मिलेगी, इच्छानुसार सभी कामकाज पूर्ण होंगे, संपर्क सुखद एवं लाभदायक रहेगा, आत्म विश्वास में वृद्धि होगी.

मकर- पारिवारिक आयोजन में शामिल होकगर खुशी मिलेगी, राजकीय उलझनें दूर होंगी, अधिकारियों से सहयोग मिलेगा, नई जवाबदारी आ सकती है.

कुम्भ- नए सौदे हाथ में आने से अच्छा लाभ होगा, विवाह की चर्चाओं में सफ्लता मिलेगी, भाग्यवर्धक प्रयास पूर्ण होंगे, निजी मामलों में सामंजस्य बना रहेगा.

मीन- सामाजिक कार्यों में भागीदारी बढ़ेगी, मेहनत के बावजूद सफ्लता मिलना मुश्किल है, आर्थिक समस्या का समाधान होगा, पारिवारिक विवादों को टालें.

SUDOKU 7119

	8	1				2	5	
2								9
5			1		7	4		
9	5			4			2	
		3	9		6	7		
	7			8			1	5
		7	2		5			1
6								7
	1	5				6	9	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-डोकू 7118

5	9	4	2	3	6	1	8	7
8	7	3	1	4	5	2	9	6
6	1	2	8	7	9	3	5	4
1	6	7	9	8	2	4	3	5
3	8	5	4	1	7	6	2	9
2	4	9	6	5	3	7	1	8
7	5	6	3	9	1	8	4	2
4	2	1	5	6	8	9	7	3
9	3	8	7	2	4	5	6	1